8. बसंत मेरे गाँव का

PART - 1 (मकर संक्रंति के बाद सूरज .... बसंत में संगीत का सुर घुल जाते हैं ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. बौराना– उन्मत्त करना 2. पौ फटना– प्रभात होना 3. सलाह देना– उपदेश देना 4. पसर जाना– फैल जाना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में मनाये जानेवाले बच्चों का बडा त्योहार कौन–सा है ?
   फूलदेई
2. फूलदेई का त्यौहार कहाँ मनाया जाता है ?
   उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में
3. फूलदेई का त्योहार किस ऋतु में मनाया जाता है ?
   बसंत ऋतु में
4. घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में क्या–क्या देते हैं ?
   गुड, चावल, दाल आदि
5. फूल न मुरझाएँ ; इसकेलिए बच्चा क्या करते हैं ?
   फूलों को न मुरझाने रिंगाल से बनी टोकरियों में रखकर रात भर पानी से भरे गागरों के ऊँपर रखा जाता है ।
6. फूलदेई त्यौहार में गाए जानेवाले चैती गीत में किन-किन के किस्से होते हैं ?
   चैती गीतों में पांडवों की हिमालय यात्रा के किस्से और पहाडी वीरों की शौर्य गाथाएँ सम्मलित होती हैं ।
7. फूलदेई त्योहार में बडों की भूमिका क्या है ?
   बच्चों को सलाह देना
8. ‘ बसंत बौराने लगता है ‘– इसका मतलब क्या है ?
   बसंत ऋतु में पहाडी ढलानों पर फ्योंली और सरसों के पीले फूलों से शानदार पीलाई छा जाते हैं । बसंत की यह खूबसूरती मन को उन्मत्त करने लगता है ।
9. उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई को बच्चों को सबसे बडा त्यौहार मानते हैं । क्यों ?
   फूलदेई त्यौहार से जुडे फूल चुनने से लेकर सामूहिक भोज बनाने तक के सारे काम बच्चे करते हैं । इस त्यौहार के आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित रहती है । इसलिए फूलदेई को उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बच्चों के बडे त्यौहार मानते हैं ।

11. रपट (उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई त्यौहार मनाया)

फूलदेई का जश्न धूमधाम से मनाया गया

स्थान : .... उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में इक्कीस दिनों से फूलदेई का त्योहार मना रहे थे । यह त्योहार पूर्ण रूप से बच्चों के द्वारा मनाया गया । बडों की भूमिका सिर्फ सलाह देना मात्र रहा । बच्चों ने रोज़ देर शाम तक रिंगाल से बनी टोकरियों में फूल चुने और गागरों में पानी भरकर उसके ऊपर रखे । रोज़ सुबह गाँव भर बच्चों की टोलियाँ घूमीं । पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए गए । जिनके घरों में फूल सजाए गए उन्होंने बच्चों को चावल,गुड,दाल आदि दिए । दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठी की गई । फूलदेई की विदाई के साथ यह उत्सव कल समाप्त हुआ । अंतिम दिन कल इकट्ठी की गई सामग्रियों से सामूजिक भोज बनाया गया । त्योहार के दिनों में लोकगीतों की प्रस्तुति हुई थीं । नाटक,प्रतियोगिता,गरीब लोगों केलिए कपडा वितरण आदि विभिन्न कार्यक्रम इसके साथ चलाए गए ।

12. मित्र के नाम पर पत्र (फूलदेई त्यौहार का वर्णन)

स्थान: ....

तारीख............

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । हमारी अध्यापिका ने पिछली कक्षा में पढाए उत्तराखंड के एक प्रमुख त्योहार फूलदेई की विशेषताएँ मैं तुमसे बाँटना चाहता हूँ ।

फूलदेई बसंत ऋतु में उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में मनाये जानेवाले बच्चों का बडा त्योहार है । इक्कीस दिन के इस त्योहार में बच्चे सुबह से शाम तक तरह-तरह के फूल चुन लेते हैं । इन फूलों को रिंगाल की टोकरियों में रखकर सुबह तक मुरझा न पाने केलिए रात भर पानी से भरे गागरों के ऊपर रखा जाता है । सुबह होते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं और इन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाए जाते हैं । उन घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में चावल,गुड,दाल आदि देते हैं । इक्कीस दिन तक इकट्ठी की जाती इन चीज़ों से अंतिम दिन सामूहिक भोज बनाया जाता है । इस त्योहार से जुडे हुए सारे काम बच्चे ही करते हैं । इस आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है ।

इस त्योहार के बारे में पढने के बाद मुझे भी वहाँ जाकर इसे देखने का मन हो रहा है। क्या तुम भी आओगे मेरे साथ ? वहाँ तुम्हारी खबर क्या-क्या हैं ? माँ-बाप से मेरा पूछताछ कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

13. टिप्पणी – फूलदेई त्यौहार

फूलदेई बसंत ऋतु में उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में मनाये जानेवाले बच्चों का बडा त्योहार है। इक्कीस दिन के इस त्योहार में बच्चे सुबह से शाम तक तरह-तरह के फूल चुन लेते हैं। इन फूलों को रिंगाल की टोकरियों में रखकर सुबह तक मुरझा न पाने केलिए रात भर पानी से भरे गागरों के ऊपर रखा जाता है। सुबह होते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं और इन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाए जाते हैं। उन घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में चावल,गुड,दाल आदि देते हैं। इक्कीस दिन तक इकट्ठी की जाती इन चीज़ों से अंतिम दिन सामूहिक भोज बनाया जाता है। इस त्योहार से जुडे हुए सारे काम बच्चे ही करते हैं। इस आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है।

14. पोस्टर – फूलदेई समारोह

उत्तराखंड कला समिति के नेतृत्व में

सामूहिक फूलदेई त्योहार

2019 मार्च 22, शुक्रवार को देहरादूर गाँव में
सुबह 8 बजे से रात 12 बजे तक

उद्घाटन - महापौर

- फूलों की प्रदर्शनी
- लोकगीत प्रस्तुति
- सामूहिक भोज
- गरीबों केलिए कपडा वितरण

सबका हार्दिक स्वागत

15. नौटियाल की डायरी

तारीख : ……………….

यहाँ आकर दो दिन हुए हैं। फूलदेई त्यौहार का मज़ा लूटने का अवसर आज मिला। वाह ! उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई से बडा बच्चों का कोई दूसरा त्यौहार नहीं है। बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित है। बच्चे फूल चुनते हैं, फूलों से घरों की देहरियों को सजाते हैं, घरों से बच्चों को चावल, गुड, दाल आदि मिलते हैं। मिली गई सामग्रियों से बच्चे सामूहिक भोज बनाते हैं। वाह ! सब कहीं आनंद ही आनंद। दरअसल यह बहुत खुशी का त्यौहार है। इसमें भाग लेने का अवसर मिलने से मैं कितना खुश हूँ, बता नहीं सकता। अच्छा नींद आती है।

शुभरात्री

16. वार्तालाप – पत्रकार और गाँववाला

पत्रकार - जी, क्या आप यहाँ के रहनेवाले हैं?

गाँववाला - हाँ। पिछले बीस साल से मैं यहाँ रहता हूँ।

पत्रकार - मैं एक पत्रकार हूँ। क्या, आप मुझे फूलदेई त्यौहार के बारे में कुछ बता सकते हैं?

गाँववाला - ज़रूर। पूछिए, आपको क्या जानना है?

पत्रकार - फूलदेई त्यौहार किस ऋतु में मनाता है?

गाँववाला - बसंत ऋतु में, इक्कीस दिन की यह बच्चों का बडा त्यौहार है।

पत्रकार - इसे बच्चों का बडा त्यौहार क्यों कहते हैं?

गाँववाला - इस त्यौहार के आयोजन में सारे काम बच्चे ही करते हैं। बडे लोग तो केवल सलाह ही देते हैं।

पत्रकार - अंतिम दिन की कोई खासियत है?

गाँववाला - अंतिम दिन को बच्चे सामूहिक भोज बनाते हैं। बडे लोग चैती गीत गाते रहते हैं। लगता है आपको कुछ भाग्य है।

पत्रकार - ऐसा क्यों कहा आपने ? बताइए ?

गाँववाला - आप यहाँ के सजावट नहीं देखा ? अरे यह तो त्यौहार का आखिरी दिन है । आप सामूहिक भोज में भाग लेकर ही जाइए ।

पत्रकार - यह तो बडी खुशी की बात है । बहुत शुक्रिया ।

17. लडके की डायरी (फूलदेई त्यौहार के बारे में)

तारीख: ....

इस वर्ष भी फूलदेई का त्यौहार मनाया गया । हम पिछले वर्ष यह त्यौहार मनाने के उन दिनों से इस वर्ष के त्यौहार की प्रतीक्षा कर रहे थे । हम बडे उत्साह से थे । एक-एक दिन हमारी टोलियाँ फूल तोडने केलिए जाती थीं । फिर हमारी टोलियाँ गाँव के विभिन्न प्रांतों में जाकर उन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाईं । उन घरों से दक्षिणा के रूप में दाल, चावल, गुड आदि मिले । हमने इक्कीस दिनों से मिली इन चीज़ों से सामूहिक भोज बनाया । मेरे साथ अनेक लडके-लडकियाँ थे । वे सभी उत्साह के साथ इस जश्न में भाग लिए । बुजुर्ग लोग हमें सलाह देने केलिए वहाँ उपस्थित थे । हम आज से अगले वर्ष के फूलदेई के त्यौहार की प्रतीक्षा में हैं ।

8 बसंत मेरे गाँव का PART - 2 (बसंत की गुनगुनी धूप .... ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा ।)

1. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. पशुचारक रास्ते में गाँववालों से क्या–क्या बेचते हैं ?

वे जानवरों के साथ-साथ कीडाजडी,करण और चुरु जैसी दुर्लभ हिमालयी जडी व औषधियाँ भी बेचते हैं ।

2. पशुचारकों की खुशी का कारण क्या है ?

महीनों बाद घर लौटने का समय आया है ।

3. पशुचारक अपनी पुरानी वसूली कब की जाती है ?

बर्फीले मौसम में निचले इलाकों की ओर जाते समय

4. ‘ नकद–उधार के आंकडे कहीं दर्ज़ नहीं होते । ‘– यहाँ के लोगों की कौन–सी विशेषता यहाँ प्रकट होता है ?

आपसी विश्वास रखनेवाले हैं ।

5. ठंड के मौसम में बर्फीले इलाकों से पशुचारक निचले इलाकों में क्यों उतरते हैं ?

ठंड के मौसम में पहाडों के चरागाह बर्फ से ढक जाते हैं । तब अपनी जानवरों को चराने केलिए वहाँ के पशुचारक अपने जानवरों के साथ

निचले इलाकों में उतरते हैं ।

6. ‘आपसी विश्वास के दम पर वर्षों से यहाँ लेन–देन चल रहा है ।‘– यहाँ गाँववालों की कौन–सी विशेषता प्रकट होती है ?

उत्तराखंड के हिमालयी अंचल के गाँववाले सीधे–सादे और ईमानदार हैं । वे किसीको धोखा देना नहीं चाहते हैं । वे पशुचारक के साथ जो

नकद–उधार करते हैं, उसका कोई आंकडे कहीं दर्ज नहीं करते । वे आपसी विश्वास को बडा मोल देते हैं ।

7. ‘जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा ।‘- इसका क्या तात्पर्य है ?

हमारे देश के ऋतु चक्र का आधार हिमालय है । बसंत, गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि बारी–बारी आने का कारण हिमालय है ।

8. अपने घर लौटने की खुशी उत्सव का माहौल रच देती है । पशुचारकों के महीनों तक के पहाडी जीवन पर टिप्पणी लिखें ।

ठंड के मौसम में बर्फीले इलाकों से पशुचारक निचले इलाकों में उतरते हैं । महीनों तक फैले चरागाहों,घने जंगलों और अनजान बस्तियों में

भटकने के बाद अपने घर लौटने की खुशी उत्सव का माहौल रच देती है । वे गीत गाते हैं, नाचते हैं । अपने साथ उनके भेड-बकरियाँ, घोडे-

खच्चर, कुत्ते भी होले हैं । रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन भी होता रहता है । वे जानवरें के साथ-साथ कीडाजडी, करण और चुरु जैसी

दुर्लभ हिमालयी जडी व औषधियाँ भी बेचते हैं । इन गाँवों से उनका सदियों का रिश्ता है ।

9. पटकथा – पशुचारक और गाँववालों के बीच का लेन-देन

स्थान - गाँव की एक सडक के किनारे ।

समय - शाम के छे बजे ।

पात्र - पशुचारक और गाँववाला ।

घटना का विवरण - पशुचारक जानवरों के साथ औषधियाँ लेकर वापस अपने घर लौटते वक्त रास्ते में एक गाँववाले से उसकी मुलाकाल होती है ।

संवाद –

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRTS

पशुचारक – नमस्ते भैया, क्या चाहिए आपको ?

गाँववाला – मुझे कुछ जडी-बूटियाँ चाहिए ।

पशुचारक – बताइए क्या-क्या चाहिए ? हमारे पास कीडाजडी, करण और चुरु हैं ।

गाँववाला – मुझे थोडा-सा कीडाजडी और चुरु चाहिए ।

पशुचारक – इतनी तो बाकी पडी है । यह तो 120 रुपए का है ।

गाँववाला – अब मेरे पास 100 रुपए ही हैं ।

पशुचारक – कोई बात नहीं, अगले साल बाकी दीजिए ।

गाँववाला – ठीक है । यह 100 रुपए ले लो, बाकी 20 रुपए अगले साल दे दूँगा ।

(जानवरों को लेकर पशुचारक आगे बढ जाते हैं ।)

10. वार्तालाप – पशुचारक और लेखक

लेखक - नमस्ते । मैं एक लेखक हूँ । आपसे कुछ बातें जानना चाहता हूँ ।
पशुचारक - नमस्ते जी, आपको क्या जानना है ?
लेखक - मैंने सुना है कि आप लोगों और गाँववालों के बीच कुछ लेन-देन चल रहा है ।
पशुचारक - हम ऐसा करते हैं जी ।
लेखक - आप लोग कैसे लेन-देन कर रहे हैं ?
पशुचारक - हम गाँववालों को भेड-बकरियाँ, घोडे-खच्चर, कीडा जडी, करण और चुरु जैसी औषधियाँ बेचते हैं ।
लेखक - गाँववाले उनकी रकम उसी समय ही देंगे ।
पशुचारक - नहीं । वे बाद में देंगे ।
लेखक - आप लोग इनके आँकडे लिखकर रखा है क्या ?
पशुचारक - नहीं जी ।
लेखक - वे धोखा देने की संभावना है क्या ?
पशुचारक - जी, वे ऐसा नहीं करेंगे । उनसे सदियों का रिश्ता है ।
लेखक - यहाँ के आपसी विश्वास पर मैं बहुत खुश हूँ ।
पशुचारक - धन्यवाद जी ।

11. रपट (पशुचारक और गाँववालों के बीच का लेन-देन)

आपसी विश्वास के दम पर सदियों से व्यापार

स्थान : …… उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बसते पशुचारकों और गाँववालों के बीच आपसी विश्वास के बल पर सदियों से लेन-देन हो रहा है । सर्दी बढने पर जानवरों के साथ निचले इलाकों में उतरे पशुचारक गर्मी होने पर वापस अपने घर लौटते हैं । इस समय रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन चलता है । वे जानवरों के साथ -साथ दुर्लभ हिमालयी जडी और औषधियाँ भी बेचते हैं । इन गाँवों से उनका सदियों का रिश्ता है, इसलिए उसी समय पूरी कीमत चुकाने की ज़रूरत नहीं होती । वर्फीले मौसम में फिर निचले इलाकों में जाते वक्त पुरानी वसूली की जाती है । मज़े की बात है कि नकद-उधार के आंकडे कहीं दर्ज़ नहीं होते । केवल आपसी विश्वास के दम पर चलते यह व्यापार बिलकुल अलग ही है ।

12. पशुचारक की डायरी

तारीख: ....

जीवन का एक खुश भरा दिन । महीनों के बाद घर लौट आया । रास्ते में हम खुशी नाचे, गीत गाए । हमारे साथ जानवर और दुर्लभ हिमालयी जडी व औषधियाँ भी थे । रास्ते में आए गाँव से अपना लेन-देन भी हुआ । उन्होंने हमसे कुछ औषधियाँ खरीदीं । पुरानी कुछ वसूली भी की । यहाँ के गाँववाले कितने अच्छे हैं । आपसी विश्वास के दम पर चलते यह व्यापार कितना लाजवाब है । हम इसे बनाए रखना चाहते हैं । घर पहुँचकर घर की कुछ सफाई की । खामोश पडे सडक अब गाडियों से भर गई है । कितनी जल्दी से यह मौसम बदलती है ।

13. लेखक की डायरी

तारीख: ....

आज अविस्मरणीय दिन है । मैंने आज उत्तराखंड से यात्रा की । यहाँ की खूबसूरती मुझे आकृष्ट की । सीढीनुमा केत, गेहू की हरियाली, सरसों के फूलों की पीलाई आदि कितने अच्छे हैं ! गाडी में यात्रा करते समय मैंने देखा कि अनेक पशुचारक खुशी से चल रहे हैं । एक

पशुचारक से पता चला कि ये महीनों के बाद चरागाहों में, घने जंगलों में और अनजान बस्तियों में भटकने के बाद अपने गाँवों में वापस आ रहे हैं। उनके साथ भेड-बकरियाँ, घोडे-खच्चर और कुत्ते भी थे। कीडाजडी, करण और चुरु जैसी हिमालयी औषधियाँ भी उनके पास थीं। जानवरों के साथ इन औषधियों को भी वे बेचते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि उनके पैसे अब देने की आवश्यकता नहीं। पिछले वर्ष की रकम अब देते हैं। वे आंकडे नहीं लिखे थे। कोई झूठ नहीं करते थे।

14. पोस्टर (संदेश) points – प्रकृति और मनुष्य के आपसी संबंध

1. प्रकृति हमारी माँ, हम सबकी जान...
   करो इसका सम्मान,प्रकृति की रक्षा हमारी सुरक्षा।
2. मनुष्य और प्रकृति का संबंध अटूट...
   प्रकृति नहीं है तो मानव भी नहीं।
3. प्राकृतिक वस्तुओं का शोषण कम करो...
   प्राकृतिक दुर्घटनाओं से रक्षा पाओ।
4. स्वच्छ प्रकृति स्वस्थ जीवन का आधार...
   प्रकृति के बिना मनुष्य का अस्तित्व नहीं।
5. पहाडियों को गिराना, जंगल-पेडों की कटाई,
   जलस्रोतों व खेतों को मिटाना आदि बंद करो...
   प्रकृति का संतुलन कायम रखो।
6. प्रकृति को संभालो...
   हमारेलिए... आगामी पीढी केलिए...।

विश्व पर्यावरण दिवस – जून 5

15. टिप्पणी – मनुष्य और प्रकृति के आपसी संबंध

यह प्रकृति करोडों प्रकार की जीव-जंतुओं का वासस्थान है। यहाँ रहने का जितना अधिकार मनुष्य का है उतना ही अन्य विबिन्न प्रकार की प्रामियों का भी है। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। यानी प्रकृति को सुरक्षित रखना और और आनेवाली पीढियों केलिए स्वच्छ और सुरक्षित छोडना हमारा दायित्व होता है। पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है। यह प्रकृति ज्ञान का श्रोत भी है। इस धरती पर रहनेवाले अनेकानेक जीव-जंतुओं और अन्य चीज़ों के बारे में पढना बडी आनंददायक बात होती है। अत्यंत विशाल इस प्रकृति में विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी, जंगल, जलस्रोत, पेड-पौधे आदि भरे हुए हैं। इन सबका संरक्षण हमारा दायित्व है। लेकिन मानव को छोडकर कोई भी जीव-जंतु प्रकृति के प्रदूषण केलिए कारण नहीं बनता। याने प्रकृति का संरक्षण हमारा कर्तव्य है। इस प्रकृति के बिना जीवन असंभव है, अरोचक है। प्रकृति की सुरक्षा हमारा परम कर्तव्य है।

16. निबंध – मौसम और त्यौहार

ऋतुएँ प्राकृतिक अवस्थाओं के आधार पर वर्ष के विभाग हैं। भारत में छह ऋतुएँ हैं – बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् , हेमंत और शिशिर। प्रत्येक की अवधि दो महीने की होती है। ऋतुओं का मूल कारण पृथ्वी की परिक्रमा है। प्रत्येक ऋतु में प्रकृति में अनेक प्रकार के परिवर्तन आते हैं। इन्हीं परिवर्तनों के आधार पर यहाँ की खेती में भी बदलाव आता है। बसंत ऋतु राज है। यह मोहक ऋतु है। होली इस ऋतु का मुख्य त्यौहार है। ग्रीष्म ऋतु प्राणियों केलिए कष्टदायक है। गुरु पूर्णिमा के त्यौहार इस ऋतु में मनाया जाता है। वर्षा ऋतु नया जीवन लेकर आती है। रक्षा बंधन का त्यौहार इस ऋतु में है। शरद् ऋतु बसंत ऋतु का दूसरा रूप है। नवरात्रि का पर्व इस ऋतु का मुख्य आकर्षण है। हेमंत ऋतु में दुनिया प्राय : स्वस्थ रहती है। दशहरा और दीपावली इस ऋतु में आते हैं। शिशिर पतझड के मास हैं। इस ऋतु में प्रकृति पर बुढापा छा जाता है। शिवरात्री का त्यौहार इस ऋतु में मनाया जाता है।

17. लेख – ओणम (त्यौहार)

ओणम केरल का देशीय त्यौहार है। यह श्रावण के महीने में अत्तम से लेकर तिरुवोणम तक के दस दिनों में मनाये जानेवाले त्यौहार है। इन दिनों में बच्चे घरों के आँगन में पूक्कलम सजाया जाता है। तिरुवोणम के दिवस सब नहलाकर नए कपडे पहनते हैं और मंदिर जाते हैं। बडे लोग बच्चों को दक्षिणा भी देते हैं। घर में विशिष्ट भोजन बनाते हैं और प्रियजनों के साथ खुशी से खाते हैं। ऐसा विश्वास है कि ओणम के दिन केरल के लोग सभी दुख भूल देते हैं। बच्चे विविध खेलों में भाग लेते हैं। कोई भेदभाव के बिना केरल के लोग ओणम खुशी से मनाते हैं। ओणम एकता और त्याग का प्रतीक है।

SREENITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIPS